



झारखण्ड ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन समिति

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण विभाग
झारखण्ड, राँची।

प्रेस विज्ञप्ति

सहिया हेल्प डेस्क

सहिया हेल्प डेस्क को दिनांक 2 से 4 जुलाई 2015 को शिमला में हुए राष्ट्रीय समीट में स्वास्थ्य मंत्रालय के द्वारा एक बेहतरीन कार्य एवं स्वास्थ्य के क्षेत्र में नया कार्य करने के लिए नामित किया गया। यह झारखण्ड राज्य के लिए गौरव की बात है।

1. राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के अंतर्गत वर्ष 2011 में सहिया हेल्प डेस्क की परिकल्पना की गई थी। लेकिन विधिवत रूप से इसकी शुरुआत वर्ष 2012 से हुई। सहिया हेल्प डेस्क की स्थापना के पीछे यह सोच थी कि अस्पतालों में आनेवाले दूरदराज के मरीजों को एक जाना-पहचाना चेहरा यानि सहिया के माध्यम से सहायता की जा सके। सहिया हेल्प डेस्क में कार्यरत सहियाएं ईलाज हेतु बाहर से आने वाले लोगों को अस्पताल के विभिन्न शाखाओं में उपलब्ध करायी जाने वाली सेवाओं के बारे में जानकारी देती हैं। ये सहियाएं अस्पताल में आने वाले इन लोगों को स्वास्थ्य विभाग के विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं के बारे में भी बताते हुए इनका लाभ लेने के लिए प्रेरित करती हैं। साथ ही जरूरत पड़ने पर डॉक्टर एवं मरीजों के मध्य दुभाषिये का कार्य भी करती हैं।
2. वैसी सहियाएं जिन्हें कार्य आधारित प्रोत्साहन राशि के भुगतान में किसी तरह की समस्या हो रही हो या जिनकी प्रोत्साहन राशि का भुगतान बकाया है, वैसी सहियाओं की समस्याओं के निराकरण का प्रयास भी करती हैं।
3. राज्य के सभी जिला अस्पतालों में सहिया हेल्प डेस्क कार्य कर रहे हैं। प्रत्येक हेल्प डेस्क में 12 सहियाएं रोटेशन के अनुसार कार्य करती हैं। एक दिन में दो सहियाएं हेल्प डेस्क का कार्य देखती हैं। इस कार्य के लिए उन्हें 150 रुपये प्रतिदिन की दर पर प्रोत्साहन राशि का भुगतान करना पड़ता है। सहिया हेल्प डेस्क प्रतिदिन सुबह नौ बजे से तीन बजे तक चलता है। हर छह माह में सहियाओं का नया बैच कार्य करता है। पुराने बैच की छह सहियाएं नये बैच की छह सहियाओं को प्रशिक्षण देती हैं। इसके अलावा राज्य सरकार की ओर से भी हेल्प डेस्क की सहियाओं को समय-समय पर प्रशिक्षण दिया जाता है।
4. सहिया हेल्प डेस्क कार्यरत सहियाओं के पास शिकायत दर्ज करने के लिए शिकायत पंजी के अलावा मरीजों का ब्यौरा से संबंधित पंजिका भी उपलब्ध रहती है। सहियाएं शिकायत पंजी में दर्ज इन शिकायतों को अस्पताल उपाधीक्षक एवं अस्पताल प्रबंधक के साथ होने वाली मासिक बैठक में निपटारा करने का प्रयास करती हैं। हेल्प डेस्क में रेफरल अस्पताल, ब्लड बैंक, एंबुलेंस, पुलिस स्टेशन आदि का संपर्क नंबर रहता है ताकि आवश्यकता पड़ने पर तत्काल उनसे संपर्क कर मरीजों की सहायता की जा सके।
5. सहिया हेल्प डेस्क में एक आई0ई0सी0 कॉर्नर भी बनाया गया है। इसमें पोस्टर, लीफ लेट, बुकलेट, पुरुष नसबंदी, बंध्याकरण, जननी सुरक्षा योजना भुगतान, सहिया प्रोत्साहन राशि आदि का फॉर्म भी

उपलब्ध रहता है। जिन्हें इनकी आवश्यकता होती है, उनको ये फॉर्म उपलब्ध कराते हुए उचित मार्गदर्शन दिए जाते हैं। जैसे— वर्ष 2014 में राज्य के सिमडेगा जिले में एंथ्रेक्स का प्रकोप हुआ था। इस दौरान सहिया हेल्प डेस्क की सहियाओं ने लोगों को इससे बचाव एवं जागरूक करने का कार्य किया। इसी तरह समय-समय पर सरकार द्वारा चलाये जाने वाले विभिन्न स्वास्थ्य अभियान एवं कार्यक्रम – पल्स पोलियो, इंद्रधनुष, एन0यू0एच0एम0, पेंटावैलेंट आदि के बारे में भी अस्पताल में आने वाले लोगों को जागरूक करने का कार्य करती हैं।

6. सहिया हेल्प डेस्क का बहुत ही सकारात्मक प्रभाव जिला अस्पतालों में देखने को मिल रहा है। इससे संस्थागत प्रसव की संख्या में 10 प्रतिशत बढ़ोत्तरी हुई है। इसी तरह स्वास्थ्य सेवाओं के प्रति लोगों की जागरूकता के कारण OPD में 11 प्रतिशत व अस्पताल कर्मियों के सकारात्मक व्यवहार के कारण IPD में 15 प्रतिशत इजाफा हुआ है।
7. वर्ष 2014-15 में 4,97,664 लोग हेल्प डेस्क से लाभान्वित हुए हैं। यह अस्पताल कर्मियों एवं मरीजों के लिए एक सहायक टूल सिद्ध हो रहा है। इससे स्वास्थ्य सेवाओं तथा उनसे मिलने वाले लाभ के संबंध में जानकारी मिल रही है। इसकी सफलता का आकलन इस बात से लगाया जा सकता है कि मेडिकल कॉलेजों एवं एफ0आर0यू0 में इस तरह के डेस्क स्थापित किये जाने की मांग उठने लगी है।

इस तरह देखा जाए तो लोगों का सहिया हेल्प डेस्क में दी जाने वाली परामर्शी सेवाओं के जरिये अस्पताल में उपलब्ध स्वास्थ्य सेवाओं पर भरोसा दिनों-दिन बढ़ रहा है। सहियाएं भी अपने सहकर्मियों की समस्याओं एवं समुदाय से आने वाले महिला-पुरुषों को उचित परामर्श देकर खुशी महसूस कर रही हैं। ये हेल्प डेस्क परामर्श केंद्र के रूप में जाना जाने लगा है।

नोडल ऑफिसर
आई0 ई0 सी0 कोषांग